



# मरुमेघ

## किसान ई – पत्रिका

[www.marumegh.com](http://www.marumegh.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध  
©2019 marumegh ISSN:2456-2904



### अनार कीव्यावसायिक वैज्ञानिक खेती

योगेन्द्र सिंह<sup>1</sup>, नरेन्द्र कुमार वर्मा<sup>2</sup>, हनुमान सिंह<sup>3</sup> एवं प्रेरक भटनागर<sup>4</sup>  
<sup>1</sup>पी.एच. डी. <sup>2</sup>एम.एस. सी. <sup>3</sup>सहायक आचार्य <sup>4</sup>सहायक आचार्य  
(फल विज्ञान) –उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय झालावाड़ –326023  
Email: [yogendrasinghphd938@gmail.com](mailto:yogendrasinghphd938@gmail.com)

**परिचय:**— भारत में अनार की खेती मुख्य रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, हरियाणा, पंजाब और गुजरात में की जाती है। घरेलू और विदेशी बाजार में अनार के अच्छे मूल्य की प्राप्ति को देखते हुए राजस्थान के काश्तकारों का रुझान अनार की खेती की ओर तेजी से बढ़ रहा है। राजस्थान में अनार की खेती जयपुर, सीकर, पाली, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, झालावाड़, बाड़मेर, टोंक व झुंझनू में मुख्य रूप से की जाती है।

**जलवायु:**— अनार उपोष्ण जलवायु का पौधा है। यह अर्द्ध जलवायु में अच्छी तरह से उगाया जा सकता है। फलों के विकास एवं पकने के समय गर्म एवं शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। लम्बे समय तक उच्च तापमान रहने से फलों में मिठास बढ़ती है।

आर्द्र जलवायु से फलों की गुणवत्ता प्रभावित होती है एवं फफूंद जनक रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है।

**मृदा:**— अनार विभिन्न प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता है परन्तु अच्छे जल निकास वाली रेतीली दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है।

#### उन्नत किस्में—

1. **गणेश** — इस किस्म के फल मध्यम आकार के होते हैं तथा बीज कोमल व गुलाबी रंग के होते हैं। यह महाराष्ट्र की मुख्य किस्म है।
2. **ज्योति** — यह किस्म बेसिन एवं ढोलका के संकरण से विकसित की गई है। फल मध्यम से बड़े आकार के चिकनी सतह एवं पीलापन लिए हुए लाल रंग के होते हैं। एरिल गुलाबी रंग के व बीज मुलायम और बहुत मीठे होते हैं।
3. **मृदुला**— इस किस्म के फल मध्यम आकार के व चिकनी सतह वाले गहरे लाल रंग के होते हैं। एरिल गहरे लाल रंग के, बीज मुलायम, रसदार एवं अधिक मीठे होते हैं। इस किस्म के फलों का औसतन भार 250 से 300 ग्राम होता है।
4. **भगवा**— इस किस्म के फल बड़े आकार के भगवा रंग के चिकने चमकदार होते हैं। एरिल आकर्षक लाल रंग की एवं बीज मुलायम होते हैं। उच्च प्रबंधन करने पर प्रति पौधा 30 से 38 किग्रा. उपज प्राप्त की जा सकती है।
5. **अरक्ता** — इस किस्म के फल बड़े आकार के, मीठे, मुलायम बीजों वाले होते हैं। एरिल लाल रंग की एवं छिलका आकर्षक लाल रंग का होता है। उच्च प्रबंधन करने पर प्रति पौधा 25 से 30 किग्रा. उपज प्राप्त की जा सकती है।



**अन्य किस्में**— कंधारी, रूबी, बेदाना, जालोर सीडलेस

पौध रोपण दूरी — आमतौर पर 5×5 या 6×6 इंसघन विधि में बाग लगाने के लिए 5×3 मीटर की दूरी पर अनार की रोपाई की जाती है। सघन विधि से बाघ लगाने पर पैदावार डेढ़ गुना तक बढ़ सकती है।

**प्रवर्धन — कलम द्वारा** — एक वर्ष पुरानी शाखाओं से 20–30 सेमी. लम्बी कलम काटकर पौधशाला में लगा दी जाती है तथा शीघ्र जड़े हेतु इन्डोल ब्यूटारिक अम्ल (आई. बी. ए.) 3000 पी. पी. एम. से कलमों को उपचारित करते हैं।

1. **गूटी द्वारा** — अनार का व्यावसायिक प्रबन्धन गूटी द्वारा किया जाता है। इस विधि में जुलाई–अगस्त में एक वर्ष पुरानी पेन्सिल के समान मोटाई वाली स्वस्थ, ओजस्वी, परिपक्व, 45 से 60 सेमी. लम्बाई की शाखा का चयन करते हैं। चुनी गई शाखा से कलिका के नीचे 3 सेमी. चौड़ी गोलाई में छाल पूर्ण रूप से अलग कर दें। छाल निकाली गई शाखा के उपरी भाग में आई. बी. ए. का लेप लगाकर नमीयुक्त स्फेगनम मोस चारों ओर लगाकर पालीथीन शीट से ढककर रस्सी से बांध दें। जब पालीथीन से जड़े दिखाई देने लगे उस समय शाखा को स्केटियर से काटकर क्यारी या गमलों में लगा दें।

**सिंचाई**— अनार के पौधे सूखा सहनशील होते हैं परन्तु अधिक उत्पादन के लिए सिंचाई अत्यधिक आवश्यक है। मृग बहार की फसल लेने के लिए सिंचाई मई के मध्य से शुरू करके मानसून आने तक नियमित रूप से करनी चाहिए। वर्षा ऋतु के बाद फलों के अच्छे विकास हेतु नियमित रूप से 10–12 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

**खाद एवं उर्वरक** — सामान्य मृदा में दस किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद 250 ग्राम नाइट्रोजन, 125 ग्राम फास्फोरस एवं 125 ग्राम पोटेशियम प्रति वर्ष प्रति पौधा देना चाहिए। प्रतिवर्ष इनकी मात्रा इस प्रकार लगाते हैं कि पाँच साल बाद प्रत्येक पौधे को क्रमशः 625 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फास्फोरस पोटेशियम दिया जा सके।

**सधाई**— अनार में सधाई का बहुत महत्व है। अनार में दो प्रकार से सधाई की जा सकती है।

✓ **एक तना पद्धति** — इस विधि में एक तने को जोड़कर बाकी सभी बाहरी शाखाओं को काट दिया जाता इस पद्धति में जमीन की सतह से अधिक सकर्ष निकलते हैं जिससे पौधा झाड़ीनुमा हो जाता है। इस पद्धति में तना ग्रसित फलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें।

✓ फलों को बहार से पेपर से ढक दें।

✓ स्पानोसेड (एस. पी.) की 0.5 ग्राम मात्रा या इण्डोक्साकार्ब (14.5 एस. पी.) 1 मिली. मात्रा या ट्रायजोफास (40 ई.सी.) की 1 किलो मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर प्रथम छिड़काव फूल आते समय एवं दूसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

1. **तना छेदक**— इस कीट की इल्लियों शाखाओं में छेद बनाकर अन्दर ही अन्दर खाकर खोखला कर देती है। और शाखाएं पीली पड़कर सूख जाती है। तथा पौधे कुछ दिनों बाद सूखने लग जाते हैं।

**नियंत्रण**

✓ क्षतिग्रस्त शाखाओं को काटकर इल्लियों सहित नष्ट कर देना चाहिए।

✓ पूर्ण रूप से प्रभावित पौधों को जड़ सहित उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

1. अधिक प्रकोप की अवस्था छेदक का अधिक प्रकोप होता है। यह पद्धति व्यावसायिक उत्पादन के लिए उपयुक्त नहीं है।

2. **बहु तना पद्धति** — इस पद्धति में अनार को इस प्रकार साधा जाता है कि इसमें तीन से चार तने छूटे हों, बाकी टहनियों को काट दिया जाता है। इस तरह साधे हुए तने में प्रकाश अच्छी तरह से पहुँचता है जिससे फूल व फल अच्छी तरह से आते हैं।

**बहार नियंत्रण** — अनार में वर्ष में तीन बार फूल आते हैं जिन्हें क्रमशः अम्बे बहार (जनवरी–फरवरी), मृग बहार (जून–जुलाई) और हस्त बहार (सितम्बर–अक्टूबर) कहते हैं। पुष्प क्षेत्र में पानी की कमी के अनुसार मृग बहार की फसल लेने की संस्तुति की जाती है। इस बहार में जून–जुलाई में फूल आते हैं तथा दिसम्बर–जनवरी में फल पककर तैयार हो जाते हैं। इस बहार के फल जनवरी से फरवरी तक तोड़ लिए जाते हैं। अवांछित बहार नियंत्रण के लिए कुछ समय पहले (मार्च–मई) सिंचाई बन्द कर देते हैं तथा कुछ रसायनों जैसे थायोरिया, इथ्रेल आदि (1 मिली/ली.) के पर्णाय छिड़काव द्वारा भी पतझड़ लाकर भी नियंत्रण किया जा सकता है।

**तुड़ाई** – अनार नॉनक्लाईमेट्रिक फल है। अनार के फल पेड़ पर ही पकते हैं। अनार के फलों की तुड़ाई तभी संभव है जब फल पूर्ण रूप से पक जाये। पौधों में फल सेट होने के बाद 120–130 दिन बाद तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। पके फल पीलापन लिए लाल हो जाते हैं।

**उपज** – पौधे रोपण के 2–3 वर्ष पश्चात फल देने प्रारम्भ कर देते हैं। लेकिन व्यावसायिक रूप से उत्पादन रोपण के 4 से 5 वर्षों बाद ही लेना चाहिए। अच्छी तरह से विकसित पौधा 60 से 80 फल प्रति वर्ष 25 से 30 वर्षों तक देता है।

**भंडारण** – शीत गृह में 5 डिग्री सेल्सियस तापमान पर 2 माह तक भण्डारित किया जा सकता है।

**प्रमुख कीट प्रबंधन –**

2. **अनार की तितली** – यह अनार का सबसे गंभीर कीट है इसके द्वारा 20–80 प्रतिशत हानि हो जाती है। ग्रसित फल सड़ जाते हैं। और असमय झड़ जाते हैं।

**नियंत्रण –**

✓ तने के छेद में न्युवान (डी. डी. वी. पी.) की 2–3 मिली. मात्रा छेद में डालकर छेद को गीली मिट्टी से बन्द कर दे।

3. **माहू** – यह कीट नई शाखाओं, पुष्पों से रस चूसते हैं परिणाम स्वरूप पत्तियां सिकुड़ जाती है। तथा पौधे सूखने लगते हैं।

**नियंत्रण**

✓ प्रारम्भिक प्रकोप होने पर पोफेनाफॉस–50 या डायमिथोएट–30 की 2 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

4. **अन्य कीट**– मकड़ी एवं मिलीबग।

**प्रमुख रोग –**

**सरकोस्पोरा धब्बा रोग** – इस रोग में फलों पर अनियमित आकार के छोटे काले रंग के धब्बे बन जाते हैं जो बाद में बड़े धब्बों में परिवर्तित हो जाते हैं।

**नियंत्रण**– रोग की प्रारम्भिक अवस्था में मेन्कोजेब ( 75 डब्लू. पी.) 2.5 ग्राम/लीटर या क्लोरोथायलोनिल (75 डब्लू. पी.) 2 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर 2–3 छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

1. **फल सड़न**– इस रोग में गोलाकार काले धब्बे फल एवं पुष्प के डण्डल पर बन जाते हैं। काले धब्बे पूष्पिय पत्तियों से शुरु होकर पूरे फल पर फैल जाते हैं।

**नियंत्रण**– कार्बेन्डिजिम ( 50 डब्लू. पी.) 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

2. **उकटा** – इस रोग में पत्तियों का पीला पड़ना, जड़ों तथा तनों की नीचले भाग को बीच से चीरने पर अंदर की लकड़ी हल्के भूरे/काले रंग का संक्रमण दिखाई देता है।

**नियंत्रण**–

✓ उकटा रोग से पूर्णतः प्रभावित पौधों को बगीचे से उखाड़कर जला दें।

✓ रोग के लक्षण दिखाई देते ही कार्बेन्डिजिम ( 50 डब्लू. पी.) 2 ग्राम प्रति लीटर या ट्राईडिमोर्फ ( 80 ई.सी.) 1 मिली./लीटर पानी में घोलकर पौधों के नीचे की मृदा को तर कर दें।